FREGA MEETS SUNDAR



FERDINANDO FREGA

फ्रेगा की सुंदर से मुलाक़ात

रेज्जो कैलाब्रिया से चेन्नई तक, सुंदर पिचाई की तलाश में।

जब मैंने पहली बार वह नाम सुना, तो मैं गंभीरता से सोचने लगा कि यह साला है कौन। हर कोई उसी की बात कर रहा था। उसने लगभग नासरत वाले की जगह ले ली थी—बस फ़र्क़ इतना था कि वह 2,000 साल पुराना नहीं था। वह सिर्फ़ 54 साल का था, और उस शानदार देश से आया था जिसे भारत कहते हैं।

दुनिया की इकलौती जगह जहाँ आप साँस तो अंग्रेज़ी हवा में लेते हैं, पर जीते हैं एशियाई संस्कृति और शालीनता के साथ, 22 भाषाओं के मेल के भीतर, जहाँ लगभग 1.5 अरब लोग स्थायी रूप से रहते हैं।

पर अपनी कहानी पर लौटें: यह नाम अल्फ़ाबेट नाम की एक कंपनी से जुड़ा था। मुझे यह भी नहीं पता था कि वे कौन हैं। मुझे लगा कि यह दुनिया के अनपढ़ लोगों के लिए बनाया गया कोई संघ है, उन लोगों के लिए जिन्हें कभी पढ़ना-लिखना सीखने का सौभाग्य नहीं मिला। फिर मुझे एहसास हुआ कि मैं पूरी तरह ग़लत भी नहीं था, क्योंकि उसका काम ठीक यही था—बस पाठ, पढ़ना और साहित्य वेब के भीतर रहते थे, जो दो कोड इस्तेमाल करता था: मानवीय दशमलव और एल्गोरिदमिक बाइनरी।

मैं उस आदमी को समझने के लिए उत्सुक था, इसलिए किपलिंग की तरह मैंने ट्रेन पकड़ी और रेज्जो कैलाब्रिया से बंबई तक का सफ़र किया, जिसे आज मुंबई कहते हैं।

मेरी मंज़िल साफ़ थी। वे चेन्नई में मेरा इंतज़ार कर रहे थे, दक्षिण भारत के तमिलनाडु राज्य में, जहाँ लॉज के भाई मुझे ठहराने वाले थे। सब जानते थे—इंग्लैंड के ग्रैंड लॉज से लेकर नीचे तक—कि भाई फ्रेगा महीने के 70 अमेरिकी डॉलर पर गुज़ारा करता था और किसी से कुछ माँगने का आदी नहीं था।

तो आख़िरकार मैं पहुँच गया। वे मेरा इंतज़ार कर रहे थे और मुझे अपने घर ले गए, पर मैंने मना कर दिया और उसकी जगह एक कमरा किराए पर लेने की

कोशिश की। तीन दिन का ठहराव मेरी आर्थिक हैसियत के भीतर था और मेरे बजट में फ़िट बैठता था।

इलाक़े से परिचित होने के लिए मेरे पास बस कुछ ही घंटे थे कि रेगुनाथा मुझे लेने आ पहुँचे। हम कहाँ जा रहे थे?

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मद्रास।

पहुँचते ही, विश्वविद्यालय के पहले प्रवेश-द्वार के ज़रा-सा भीतर, मैंने एक बोर्ड देखा जिसने मुझे बिजली की तरह झकझोर दिया। संस्कृत में लिखे उनके आदर्श-वाक्य का अनुवाद था:

सफलता कर्म से उत्पन्न होती है।

हमारा स्वागत दो प्रोफ़ेसरों ने किया, जो फ़्रीमेसन भाई थे, और मैंने तुरंत उनसे सुंदर के बारे में पूछना शुरू कर दिया। मुझे पक्का यक़ीन था कि उसने मद्रास में पढ़ाई की थी, उन दिनों जब वे अभी सहायक ही थे।

प्रोफ़ेसरों ने माना कि वे जानते हैं वह कौन है, हालाँकि असल में उसने खड़गपुर में पढ़ाई की थी। पर यहाँ, उन्होंने कहा, हम सब उसे अपना ही मानते हैं।

किसी भी और बात से पहले, उन्होंने समझाया कि हम कहाँ हैं। यह बोस्टन का कोई मामूली विश्वविद्यालय कैंपस नहीं था। हम किसी अविश्वसनीय चीज़ के भीतर थे: आईआईटी मद्रास के पास आईबीएम वर्गो सुपर क्लस्टर के ज़रिए सुपरकंप्यूटिंग क्षमता भी थी, जो 97 टेराफ़्लॉप्स की गणना-शक्ति देता था।

यह किस बला का नाम था, मुझे कोई अंदाज़ा नहीं था। मुझे कंप्यूटर की ख़ाक भी समझ नहीं है, पर मैंने सिर हिला दिया, क्योंकि उनके लहजे से मैं समझ गया था कि बात अहम है। और मेरे वहाँ होने के लिए इतना ही काफ़ी था।

औपचारिकताओं के बाद हम वहाँ से निकले, और रेगुनाथा ने मुझसे कहा कि उनके पास मेरे लिए एक सरप्राइज़ है। मैंने कहा, "उम्मीद है कि औरतें नहीं होंगी। मैं 61 साल का हूँ और अब जवान नहीं रहा। आजकल औरतें बातचीत का मेरा सबसे पसंदीदा रूप हैं, क्योंकि मैं उनकी सृजनशीलता और बुद्धिमत्ता से प्रेरणा लेता हूँ और दोनों से पोषण पाता हूँ।"

उन्होंने कहा कि हम एक महिला से मिलने जा रहे हैं। "पर बेफ़िक्र रहो, नांदो, इसमें सेक्स का कोई चक्कर नहीं है। लगता है वे उस आदमी को बहुत अच्छी तरह जानती हैं जिसके बारे में तुम खोजबीन कर रहे हो, और तुम देखोगे कि वे तुम्हें निराश नहीं करेंगी।"

"और फिर, तुम तो जानते हो कि फ़्रीमेसन होने से पहले हम अच्छे चरित्र वाले स्वतंत्र पुरुष हैं!"

"हाँ, पर कृपया कपड़े पहने ही रहें।" हाहाहाहाहाह।

हम उनके घर के गेट से भीतर गए। एक युवती ने हमारा स्वागत किया। वह क़रीब 25 साल की रही होगी, पर मुझे नहीं लगा कि वह सुंदर की बेटी है—और सचमुच, वह उस महिला की भतीजी थी जो हमारा इंतज़ार कर रही थीं।

उन्होंने हमारा स्वागत किया और हमें अपने सोफ़े पर बिठाया। उन्होंने हमें वह अनिवार्य चाय पेश की, पर एक अच्छे कैलाब्रियाई की तरह मैंने पूछा कि हम खाना कब खाएँगे। मैं दो दिन से पानी पर जी रहा था, और मेरा पेट पहले ही हड़ताल पर था। उसे अब तक यह समझ नहीं आया था कि हम इटली में नहीं हैं।

महिला ने अपना परिचय राधा के रूप में दिया और तुरंत मुझसे सीधे सवाल पूछने लगीं, यह पहले से जानते हुए कि मैं कौन हूँ।

मैं रेगुनाथा की ओर झुका और फुसफुसाया, "राधा, जैसे ज़ोहो वाली?"

और उन्होंने, चेहरे का भाव बदले बिना, कहा, "नहीं, वह इनसे छोटी है। ये ज़्यादा समझदार हैं।"

उन्होंने बताया कि gillettenarrative.com पर द विल्किंसन सागा पढ़ते हुए उन्हें बहुत मज़ा आया था। शायद उन्होंने उसे 20 बार पढ़ा था और कुछ अंशों में ख़ुद को पहचाना था—अपनी आंटी के किरदार में। फिर, ज़बरदस्त स्त्री-सुलभ आकर्षण के साथ, 90 साल की होने के बावजूद, उन्होंने मुझसे पूछा कि क्या उसमें लिखा सब कुछ सच है।

मैंने एक सीधे-सादे मज़ाक़ से जवाब दिया: सच और झूठ जीवन के दो एल्गोरिदम हैं, और उनके बीच कथा रहती है, जो उसे लिखने वाले उस एक व्यक्ति की दृश्य अभिव्यक्ति बनी रहती है।

वे मुस्कुराईं, पर उन्हें हैरानी नहीं हुई। उन्होंने कहा कि यही एकमात्र जवाब था जो मैं दे सकता था। उसने बिना कहे बता दिया कि मैं कौन हूँ। इसीलिए वे मुझे सुंदर के बारे में जानकारी देंगी।

जब वह छोटा था, तो हमेशा सौ शून्य बनाता रहता था, और कोई नहीं समझ पाता था क्यों। एक दिन उसने उनके आगे 1 लगा दिया। हमें लगा कि यह उसके भविष्य के बैंक खाते को दर्शाता है। तीस साल बाद वह ठीक इसी नाम वाली एक कंपनी के लिए काम कर रहा था: गूगल, गूगोल से, यानी 1 के बाद 100 शून्य।

इस दोष का ठीकरा उसकी माँ के स्टेनोग्राफ़र वाले काम पर फोड़ने को हर कोई हमेशा तैयार रहता था। पर हम तो अभी शुरुआत में ही थे, और आज हम समझते हैं कि जिस दोष के साथ वह पैदा हुआ था, वह पूर्णता के सिवा कुछ नहीं निकला।

हमें एक भरोसेमंद सूत्र से पता चला कि एक दिन, हमेशा की तरह जिज्ञासु, उसकी माँ ने अपने बेटे से पूछा कि बैंक उसे 12 शून्यों वाला बैंक बैलेंस कैसे भेज लेता है। उसने जवाब दिया, "वे अंक हाथ से घसीटकर लिखते हैं। जगह काफ़ी नहीं होती।"

मैंने ग़ौर किया कि सारी कहानियों के दौरान वह महिला और मेरे साथ आए भाई —जो ख़ुद भी एक बुज़ुर्ग आदमी थे—अक्सर एक-दूसरे को अर्थभरी नज़रों से देखते थे। पर मेरा ध्यान सिर्फ़ अपने काम पर था और मैं उनके व्यवहार के कोड को समझने के लिए नहीं रुका।

राधा ने मुझे बताया कि सुंदर हमेशा से सबका चहेता रहा था और उसकी शालीनता, बुद्धिमत्ता और आकर्षण की वजह से औरतें अक्सर उसके साथ रहती थीं। लगभग मेरा ही चित्र, अगर हमारी जेबों का फ़र्क़ न होता।

जब मौक़ा आया, तो मैंने 65 देशों में अपने 40 साल के सफ़र की कुछ कहानियाँ सुनाईं: एक जीवन की कहानियाँ, चुटकुले और रोमांच। महिला इतनी तल्लीन लगीं कि उन्होंने हमें रात के खाने पर बुला लिया। पर मैंने विनम्रता से तय किया कि इसे स्वीकार करना ठीक नहीं होगा। मैं अभी तैयार नहीं था।

जब हम निकल रहे थे, उन्होंने मुझे काग़ज़ की एक छोटी-सी पर्ची दी और कहा, "नांदो, जब चाहो मुझे लिखना। तुम्हारे पत्र पाकर मुझे बड़ी ख़ुशी होती है। और तुम मुझे आंटी कह सकते हो—मुझे गर्व होगा।"

रेगुनाथा पागलों की तरह हँस रहे थे, और मैं समझ नहीं पा रहा था क्यों। उन्होंने कहा कि ऐसी स्थिति में ख़ुद को पाए उन्हें कम से कम 30 साल हो गए थे। मैंने उनसे कहा कि मुझे होटल वापस छोड़ दें, पर उससे पहले जिज्ञासावश मैंने उनसे पूछ ही लिया:

"माफ़ करना, पर तुम्हारी पत्नी क्या काम करती थी?"

बिना सोचे उन्होंने जवाब दिया, "वह स्टेनोग्राफ़र थी।"

मैं फट पड़ने ही वाला था, पर मैंने ख़ुद को रोक लिया। उस वक़्त मैंने उनसे कहा कि मुझे होटल के पास छोड़ दें। खाने के लिए कोई जगह मैं ख़ुद ढूँढ लूँगा, और अगले दिन निकल जाऊँगा।

उन्होंने पूछा कि क्या मुझे और कुछ चाहिए, और मैंने उन्हें न्योता दिया कि जब भी मौक़ा मिले, कैलाब्रिया में मेरे घर आएँ। उनकी मेज़बानी करके मुझे बेहद ख़ुशी होगी—उन्हें दिखाने के लिए कि हम कैलाब्रियाई दुनिया में कहीं भी क्या अच्छी तरह करना जानते हैं।

पर असल में, इस कहानी के किरदार कौन थे?

असली लोग। मैंने उनसे कभी नहीं पूछा कि वे कहाँ से आए थे। मैंने बस उनकी मौजूदगी को स्वीकार किया, क्योंकि 61 साल से मैं यही करता आ रहा हूँ—और मुझे यक़ीन है कि दुनिया मुझे नहीं भूलेगी।

और उस भारतीय महिला की छोटी-सी पर्ची के भीतर मुझे एक संदेश मिला, जिसमें लिखा था: "जब चाहो मेरे पास लौट आना। तुम्हारा हमेशा स्वागत है।" नीचे उनका पता था।

अगले दिन मैं स्टेशन लौटा। ट्रेन जैसे चलना ही नहीं चाहती थी, पर मुझे नहीं पता था क्यों। शायद वह मेरा इंतज़ार कर रही थी। या शायद उसने समझ लिया था कि "मेरा अफ़्रीका" के बाद एक कैलाब्रियाई का "मेरा भारत" भी हो सकता है।

फर्दिनांदो फ्रेगा
BLADEFREGA · लेखक नांदो